पद १८

(रागु: साम - ताल: त्रिताल)

निमतों ज्ञानपुंज पदकमलां। वदतों लीला। प्रभु हा हरि हा, विधि हा, शिव हा, एकचि झाला।।धु.।। झाला माणिक करितो निजलीला। प्रभु हा, हरि हा, विधिहा शिव हा, एकचि झाला।।१।। सकलमतासीं स्थापक तो गुरु। भक्त काम पुरवाया सुरतरु। जगकल्याणीं झाली कथा। ती ऐका। मनसा, वचसा, सुरसा, वदतों लीला।।२॥ सिच्चदानंद कंद विजय तूं। ज्ञानरूप मार्तांड गुरू तूं। या भवकाननीं दावि पथा। ती ऐका। मनसा वचसा सुरसा वदतों लीला॥३॥